P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-2* May- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

ए० रामचंद्रन की चित्रशैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

दिलीप कुमार पटेल
असिस्टेंट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
शिक्षा विद्यापीठ,
हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय,
हरियाणा

अनोज राज
एसोसिएट प्रोफेसर,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
शिक्षा विद्यापीठ,
हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय,
हरियाणा

सारांश

प्राचीनकाल से ही कला मनुष्य के जीवन में भावों को अभिव्यक्त करने का साधन रही है। जब बालक बोलना भी नहीं सीख पाते, तब वे अपनी भावनाओं, जिज्ञासाओं व इच्छाओं को अपने–भावों के द्वारा ही अभिव्यक्त करने का प्रयत्न करते हैं। यही नही बालक से प्रौढ़ावस्था तक मनुष्य जीवन के हर एक पल में ज्ञान प्राप्त कर अपनी भावनावों को कला के विभिन्न माध्यमों जैसे संगीत, चित्रों एवं लेखन आदि के द्वारा व्यक्त करते रहते हैं। कुछ लोग अपनी कला अभिव्यक्ति के माध्यमों का अपनी अविरल साधना से समाज में चेतना का विकास कर समाज–शोधन का कार्य करते रहते हैं। इनमें ए० रामचंद्रन का योगदान विशिष्ट श्रेणी का रहा। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुये वर्तमान शोध पत्र में ए० रामचंद्रन की चित्रशैली का अध्ययन किया गया। निष्कर्षों से स्पष्ट है कि उनकी चित्रकला में बाल–साहित्य चित्र, भित्ति–चित्र, मूर्ति एवम् चित्रकला, आकृति मूलक चित्र, धार्मिक पक्षों में नारी एवम् सौन्दर्य का समन्वय, आदिवासी चित्र तथा समुदाय चित्रों की प्रधानता है। ए० रामचंद्रन ने प्रत्येक चित्रों के द्वारा समाज में नारी के स्थान, वर्तमान आर्थिक दशा के साथ लोकचित्रों जैसे–राजस्थान के भील–चित्र और केरल के भित्ति–चित्रों को उकेरा। जिससे स्पष्ट है कि ए० रामचन्द्रन का योगदान समाज के उत्थान के लिए महत्वपूर्ण है।

मुख्य शब्द : ए० रामचंद्रन, चित्रशैली, भित्ति–चित्र, मूर्तिकला।

प्रस्तावना

भारतीय समकालीन कलाकारों के प्रभावशाली अंकन और कल्पनाशीलता के अद्भुत सृजन कला–प्रेमियों को आकर्षित करते रहते हैं। इनमेंए० रामचंद्रन की कला का प्रभाव मानव–मस्तिष्क पर अपनी छाप अंकित करती है जिसके कारण ए० रामचंद्रन कला को अभिव्यंजनावाद के रूप में ढाला हुआ माना जाता है। साथ ही उनकी कला में निहित मानवीय रूप की कल्पनात्मक चेतना की झलक अतियथार्थवाद के नजदीक ले जाती है। ए० रामचंद्रन का जन्म वर्ष 1935 में केरल के अटिंगल में हुआ था। इसका पूरा नाम अच्युतन रामचंद्रन नायर है। उन्होंने केरल विश्वविद्यालय से मलयालम में एम.ए. करने के पश्चात् और चित्रकला में रूचि के कारण शान्ति निकेतन से वर्ष 1961 में चित्रकला की डिप्लोमा परीक्षा उत्तीर्ण की। इस अवधि में वर्ष 1960 में दिल्ली में उन्होंने अपनी प्रथम एकल प्रदर्शनी आयोजित की। वर्ष 1961 से 1964 तक इन्होंने केरल के भित्ति–चित्रों पर अपनी डॉक्टरेट की उपाधि को पूर्ण किया। ए० रामचंद्रन जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में चित्रकला विभाग में प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष रहे। ए० रामचंद्रन एक मूर्तिकार, चित्रकार तथा भित्ति–चित्रकार की विशेषताएँ अपने व्यक्तित्व में समाहित किये हैं। ए० रामचंद्रन मूलतः आकृतिमूलक कलाकार हैं। प्रायः बड़े आकार के कैनवासों पर कार्य करना पसन्द करते हैं। वर्ष 1991 में उनको ललित कला अकादमी केरल का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। प्रारम्भ में रामचंद्रन ने एक अभिव्यक्तिवादी शैली में चित्रण का कार्य किया। वर्ष 2005 में उत्कृष्ट सेवा के लिए उन्हें पद्‌म भूषण से सम्मानित किया गया। वर्ष 1961 में रामकिंकर वैज और विनोद विहारी मुखर्जी जैसे स्वामी के अधीन रहकर अपनी कला शिक्षा को पूरा किया। रामचंद्रन ने मलयालम में कुछ पुस्तकों को भी प्रकाशित किया है। रामकिंकर बैज से वे अत्यन्त प्रभावित रहे हैं। वर्तमान में दिल्ली में रहकर ही कला सृजन का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने भारत, जापान, इग्लैण्ड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में बाल–साहित्य के लिए दृष्टान्त चित्र बनाये जिसके फलस्वरूप उन्हें वर्ष 1978 और 1980 में नोमा कॉन्सोर पुरस्कार से नवाजा गया। ए० रामचंद्रन भारत के सबसे प्रतिष्ठित और विपुल कलाकारों में से एक हैं। जिन्होनें चार दशकों से अधिक समय तक दृश्य–भाषा के साथ निरंतर प्रयोग किया है। उनकी कला विशिष्ट रूप से समकालीन और भारतीय दोनों में विशिष्ट है।

अध्ययन का उद्देश्य

भारत में चित्रकला का इतिहास बहुत ही प्रभावशाली रहा जिसके उदाहरण होशंगाबाद तथा भीमवेटका की कंदराओं और गुफाओं में पाये गये। ईसा से एक सदी पूर्व 'षड़ांग' चित्रकला का विकास हुआ। गुप्तकाल में चित्रकला की विषय–वस्तु बौद्ध धर्म से सम्बन्धित भित्ति–चित्रों का निर्माण पर था।

मध्य काल में शाही महल और मस्जिद कैनवास बने आधुनिक काल में अवनिन्द्र नाथ ठाकुर, नंदलाल बोस, विनोद विहारी मुखर्जी, अमृता शेरगिल और यामिनी राय आदि ने भारतीय चित्रकला को मूर्त रूप दिया। इसके पश्चात् समकालीन चित्रकारों में रामकुमार, देवकीनन्दन शर्मा, कृष्ण खन्ना, जेराम पटेल, जे• स्वामीनाथन, ए० रामचंद्रन, जी• आर• सन्तोष और तैयब मेहता आदि का योगदान सदैव रहा। इस काल में सामाजिक चेतना, नारी, मानव आकृतियों पर प्रयोग किये गये। जिनमें से ए० रामचंद्रन ने चित्रकला, भित्ति–चित्रों तथा बाल चित्र साहित्य का निर्माण कर सामाजिक व संवेगात्मक शक्तियों के साथ मानसिक जकड़न से मुक्ति के द्वार को खोलने का प्रयास किया इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखते हुये वर्तमान आलेख का ध्येय ए० रामचंद्रन की चित्रशैली का परिचय कराकर विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है ताकि ए० रामचंद्रन की चित्रकला का सही अर्थापन किया जा सके।

साहित्यावलोकन

वर्तमान शोध आलेख का उद्‌देश्य ए० रामचंद्रन की चित्रशैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है हालांकि ए० रामचंद्रन के कार्यो पर शोध बहुत कम हुये हैं उनमें से कुछ शोध–साहित्यों का अवलोकन निम्नवत् हैं–

ममता चतुर्वेदी (2008) ने अपनी पुस्तक 'समकालीन भारतीय कला' स्पष्ट करते हुये लिखा है कि ए० रामचंद्रन एक चित्रकार, मूर्तिकार तथा भित्ति कलाकार की विशेषताएं अपने व्यक्तित्व में समाहित किये हैं। मूर्ति शिल्प के त्रिआयामी माध्यम में 'टोटम' सदृश्य कांस्य मूर्तिशिल्प सभी बनाये। इस क्षेत्र में ए० रामचंद्रन ने रामकिंकर बैज से अत्यन्त प्रभावित रहे हैं।

ए० रामचंद्रन की कला प्रदर्शनी 'इकलिन्जी फेन्टेसी' जो भीलों के प्रति उनके प्यार का प्रदर्शन है जिसमें मनुष्य प्रकृति के साथ जीवन का आनंद लेता है (2 नवम्बर, 2014 इडियन एक्सप्रेस)। 'ययाति' जैसे चित्र महाकाव्य जो महाभारत में 'ययाति' की कहानी पर आधारित जिसको बनाने में 4 वर्ष का समय लगा तथा धार्मिक काल्पनिक एवं केरल के भित्ति–चित्रों में रंगों के प्रयोग का अनूठा प्रयोग करना ए० रामचंद्रन की वैज्ञानिकता एवं परिपक्वता को बयां करते हैं (लिसा जैन, 2016)। भारतीय चित्रकला इस काल में व्यवसाय का रूप लेने लगी जिस पर वैश्वीकरण का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा जिसके परिणाम स्वरूप वर्ष 2013 में चित्रकला का बाजार 1200 करोड़ का था (अर्चना वर्मा, 2014)।

उपरोक्त साहित्य अवलोकन से स्पष्ट है कि ए० रामचंद्रन से सम्बन्धित शोध कार्य केवल उनके किसी एक विद्या से सम्बन्ध रखते हैं और उनके सम्पूर्ण चित्रकला का विश्लेषणात्मक अध्ययन नाम मात्र के है। अतः वर्तमान शोध आलेख इस कमी को पूरा करने का प्रयास है।

ए० रामचंद्रन और उनका दृष्टिकोण

चित्रकार, मूर्तिकार, ग्राफिककार, डिजाइनर और कला शिक्षाविद् ए० रामचंद्रन ने गतिशील व्यक्तिगत दृष्टिकोण और विशिष्ट कलात्मक शैली के साथ विविध माध्यमों और मापों का पता लगाया है। उन्होंने यह यात्रा एक अभिव्यक्तिवादी चित्रकार के रूप में शुरू की जो मानवीय स्थिति और दुःख की दुर्दशा की खोज करती है। उनकी यह खोज एक विशाल पैमाने पर पहले से ही केरल में अपने शुरूआती जीवन में राजनीतिक रूप से संवेदीकरण होने के कारण हुई थी। गरीबी और पीड़ा को उन्होनें कोलकत्ता की सड़कों पर देखा और बाद में नई दिल्ली ने उन्हें गंभीर मानवीय छवियों का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया जो कि संख्याओं के रूप में मानवों का प्रतिनिधित्व करती हैं (चित्र संख्या–8 व 9)। उनके शुरूआती कार्यो ने शोषण, उत्पीड़न, युद्ध, मानवीय क्रूरता और राजनीतिक हिंसा के विषयों को पुनः अधिनियमित किया। उनके पुराने कार्यो में निहित अंधेरे, अत्याचार की छवियां के विपरीत उनकी कलात्मक यात्रा उत्तरार्थ में धीरे–धीरे जीवन और प्रकृति के साथ भावपूर्ण ढंग में स्थानांतरित हो गये। इन्होंने मुखौटा, मूढ़–पुरूष, निकायों, शुरू करने के लिए देहाती, अनोखी महिला को आंकड़ों द्वारा प्रतिस्थापित किया उसके बाद चेहरे दिखाई देते थे। उन्होंने महाकाव्य चित्रकला 'ययाती'में का मूक अभिव्यक्ति शैलीकृत मानव और प्राकृतिक रूपों के साथ मिलाकर बनायी। उनकी हाल की रचनाएँ अपने संख्या और बहुमुखी रूपों में प्रकृति और जीवन का जश्न मनाती हैं। उनके द्वारा विभिन्न तकनीकों और माध्यमों के प्रयोगों के साथ रूपों और छवियों के साथ निरंतर व्यस्तता ने इस परिवर्तन को बनाया है। स्थान–स्थान में दूरदराज के आदिवासी गांवों का अध्ययन करने के लिए लगातार यात्राएँ की। राजस्थानी लघु–परंपराओं का अध्ययन करने के लिए रामचंद्रन की दृश्य भाषा को और अधिक प्रस्कृत किया। भारतीय–शास्त्रीय कला के कई पहलुओं को उन्होंने अपनी कला में एकीकृत किया है। जिसमें मिश्रित रूपांकनों और कल्पनाएं, सजावटी तत्व शामिल हैं, साथ ही रूपों और रंगों के उत्साह के साथ साधारण आदिवासी–लोक और प्राकृतिक परिदृश्य, जो उन्होंने राजस्थान में स्केच जारी किये हैं, यह सभी नियोजित भारतीय–शास्त्रीय कला की प्रतिभा में बुने जा चुके हैं। इन समन्वित पहलुओं को ए० रामचंद्रन हाल के जीवन–आकार वाले कांस्य की मूर्तियों में दृढ़ता से प्रकट किया है, जो बड़े पैमाने पर ये वनस्पतियों और जीवों की प्रकृति के साथ घिरी हुई हैं। भले ही भित्ति–चित्रों में बहुत बड़े पैमाने पर और सहज चित्रों की अंतरंगता के साथ आसानी से रामचंद्रन ने कलम और स्याही में हजारों चित्रों को अंजाम दिया। इस तरह कई रंग–रंगों में वे रंगों की पतली धूल के कई परतों को जोड़कर बनाते रहे हैं। रंगों की विविध रचनाओं की जटिलता और रूपों और छवियों के संवेदनशील प्रतिपादन के मामले में बड़े कैनवास से मेल खाते हैं। ए० रामचंद्रन ने तीन दशकों तक कला को

पढ़ाया, कला पर लिखा और कई भाषण दिये और साथ ही टिकटों और चीनी मिट्टी की चीजें भी तैयार की।

ए० रामचंद्रन ने बच्चों के लिए कई चित्र–पुस्तकों को लिखा जो बेहद सराही गयी हैं। उनकी आदर्श छवियॉ राजस्थान के भील समुदाय की टिप्पणियों से निकलती हैं। उन्होंने महिलाओं को अपनी पेंटिंग्स का आधार बनाया। वर्ष 1980 के दशक तक उन्होंने राजस्थान की संस्कृति को आत्मसात् कर लिया था और उसके अनुरूप एक जीवन्त रंग अपनाया। इसी प्रकार केरल के मंदिरों में भित्ति–चित्रों के रंग और रूप उनके अभिव्यक्ति की विधि को प्रभावित करने लगे।

ए० रामचंद्रन की चित्रशैली

प्रारम्भ में ए० रामचंद्रन ने एक अभिव्यक्तिवादी शैली में अपनी चित्रों को चित्रित किया जिसमें दंगों या शहरी जीवन को सबसे मार्मिकता से दर्शाया गया है। उनकी चित्रकला भित्ति–चित्रों की तरह बड़ी थी और जिसमें एक शक्तिशाली अलंकारिक रूप का प्रकटीकरण देखने को मिलता है। 1980 के दशक तक ए० रामचंद्रन के काम में बहुत परिवर्तन हुआ। राजस्थान में एक जीवंत जनजातीय समुदाय को उन्होंने अपनी कल्पनाओं में जकड़नें के साथ ही केरल के मंदिरों में बनें भित्ति–चित्रों के रंग और रूपों ने उनकी अभिव्यक्ति को प्रभावित करना शुरू किया। चित्रकला की इस नई शैली का दर्शन उनकी पहली श्रृंखला 'ययाति' में देखने को मिलता है। रामचंद्रन ने चित्रों और मूर्तियों के साथ प्रयोग कर चित्रकला का एक पूर्ण माहौल तैयार करना शुरू किया। रामचंद्रन ने मूर्तियों की रचना की जो उनकी चित्रों की तुलना में औपचारिक रूप से और अधिक दिलचस्प थी। एक चित्रकार के रूप में रामचंद्रन की रेखाओं, रंगों और रूपों पर मजबूत पकड़ उनको एक रोमांचक दृश्यकारी नाटककार बनाता है। ए० रामचंद्रन का कैनवास तनाव भरे बढ़ते जीवन की भावना के साथ जीवन्तकारी है। समय के साथ गरीबी और भ्रष्टाचार की दैनिक घटनाएँ, अनैतिक भारतीय राजनीति, विस्फोटक साम्प्रदायिक तनाव एंव अन्य शहरी समस्याएँ उनकी कला का विषय बनने लगी।

ए० रामचंद्रन की चित्रकला शैली ने समकालीन वैचारिक स्थिति को स्पष्ट करने भारतीय सौन्दर्यशास्त्र और शास्त्रीय भारतीय छवियों के उपयोग के लिए एक मजबूत विषय का कार्य किया है। ए० रामचंद्रन द्वारा सृजित विशाल चित्रकला 'ययाति' कला विकास के इतिहास में उनको एक कलाकर के रूप में स्थापित कर एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करती है। उनके द्वारा स्व–सृजित कला के कई एकल प्रदर्शनियों का आयोजन देश–विदेश में होता रहा है जिनमे वर्ष 2008 में लंदन के ग्रोसवेनट बठेरा में 'हालिया काम', फेस टू फेसः आर्ट प्रेक्टिस ऑफ अ रामचंद्रन 'गिलड आर्ट गैलरी' और आइलैण्ड में गौवी के महासागर के चित्र शामिल हैं। ए० रामचंद्रन ने वर्ष 1983 में जहाँगीर आर्ट गैलरी ऑफ मुम्बई के कई समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया। जिसमें प्रमुख रूप से वर्ष 2009 में ग्रोस्वेनट गैलरी, लंदन में 'प्रोग्रेसिव टू अल्टरमोडोन' शामिल हैं। उनकी प्रारम्भिक कृतियाँ जो लगभग वर्ष 1960 ई0 से 1970 ई0 के मध्य बनायी गयी तत्कालीन युग के सामाजिक परिवेश का विरूपित बिम्बों के रूपों का चित्रण है। जिनमें महाकाली पूजा, मशीन एनकाउण्टर एण्ड ऑफ दी याहवाज आदि ऐसे ही चित्र हैं।

वर्ष 1980 ई0 से 1990 ई0 के मध्य में ए० रामचंद्रन ने भावनात्मक आवेशयुक्त संवेदनाओं को चित्रों में अभिव्यक्ति किया इन चित्रों में इतिहास, सामाजिक या राजनैतिक स्थिति का चित्रण न होकर सार्वभौमिक प्रतीकों, बिम्बों एवं आकारों की अभिव्यक्ति की गयी है। 'ययाति' नामक भित्ति–चित्रों जैसी विशाल कलाकृति जिसकी चौडाई 70 फीट और लम्बाई 60 फिट उससमय का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। जिसे वर्ष 1986 ई0 में दिल्ली में प्रदर्शित किया गया था। 'ययाति' एक चित्रण महाकाव्य है। प्रसिद्ध 'ययाति' चित्रकला के 12 पैनलों के आधार पर धारावाहिकों का एक पोर्टफोलियो है (चित्र संख्या–1 से 6 तक)। 'ययाति' श्रृंखला रंगों की एक श्रृंखला को दृश्यमान करने में सक्षम रही है। जिसमें नारी के मांसल सौन्दर्य को आकर्षक रूपों में चित्रित किया है। ऐसा लगता है जैसे 'ययाति' के बारे में ए० रामचंद्रन ने सोचने के साथ प्रत्यक्ष वेणा करके चित्रित किया। इसी श्रेणी में उर्वशी, पुरूरवाज, एण्ड लोटस पांड चित्र श्रृंखलाएँ ए० रामचंद्रन की कला सृजन के शानदार उदाहरण हैं। ए० रामचंद्रन ने पुराकलाओं, आदिवासी समुदायों तथा केरल के भित्ति–चित्रों के तत्वों से प्रेरित होकर चित्रण किया। उनके द्वारा मानव के रूप सौन्दर्य को कला के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास निरंतर किया है। कला सृजन में उनको अद्‌भुत संतोष, रस तथा रंग की अनूभूति होती है। वास्तव में कला मानव की अनेक गतिविधियों में दृष्टिगत होती है। कला विश्व की परिचालित शक्ति है जो मानव समुदाय को एक सूत्र में बांधती है। कला सौन्दर्य का सृजन करती है। सौन्दर्य के प्रतिमान देश, काल तथा परिस्थिति अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। कला और संस्कृति के निर्माण में प्रागैतिहासिक काल से समकालीन तक सौन्दर्य दृष्टि का योगदान सदैव रहा है। चित्र और काल से उभरते सौन्दर्य दर्शन कला रसास्वादन के आधार रहे हैं। समकालीन में ए० रामचंद्रन पर आधारित जो चित्र शैलियां हैं उनमें नारी एवम् सौन्दर्यात्मक परिवेश दिखाई देता है।

भारतीय संस्कृति और समाज में नारी को उच्च स्थान दिया गया। ए० रामचंद्रन आकाशवाणी पर गायन के कार्यक्रम में भाग लेते थे। वे बच्चों की पुस्तकें भी लिखते तथा चित्रित करते रहते हैं। उन्होंने डाक–विभागों की टिकटों का भी डिजाइन किया (चित्र संख्या–4)। ए० रामचंद्रन प्रायः बड़े कैनवासों पर कार्य करना पसन्द करते हैं। इनमें उन्होंने विकृति के द्वारा अभिव्यंजनावादी पद्धति का सहारा लिया है। उन्होंने कई आईकोनोग्राफी रेखांकन का कार्य किया जिसमें रंगों का कोई तात्पर्य नही है। द ग्रेव डिगर्स तथा एनटाम्बमेण्ट उनके इस प्रकार के प्रमुख चित्र हैं। भारतीय समकालीन कला जगत् में संघर्ष करते हुए अपने आपको प्रतिष्ठित करने वाले ए० रामचंद्रन का कला जगत में महत्वपूर्ण योगदान है। प्रारम्भ से ही ए० रामचंद्रन किसी रूढ़िवादी परम्परा में बंधकर नहीं रहना चाहते थे लेकिन बचपन से उनकी कला के प्रति एक निरंतर रूचि बनी रही थी। ए० रामचंद्रन ने

सामाजिक विषयों को अपने कैनवास पर ज्यादा महत्व दिया है। ए० रामचंद्रन की कला हमारे समान हमारे जीवन से सम्बन्धित है। उनकी चित्रशैली पर राजस्थान समुदाय के भील, धार्मिक, सामाजिक, गरीब पीड़ित से प्रभावित रहे और चित्रों में ए० रामचंद्रन ने अपनी तूलिका के माध्यम से भित्तियों पर नारी की सौन्दर्य, करूणा, फूल–पत्ती तथा अभिलेखन आदि का चित्रण किया है।

ए० रामचंद्रन की चित्रशैली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

ए० रामचंद्रन ने अपनी कृतियों में कंकाल सदृश सिर–विहीन मानवाकृतियॉ, मानवीय क्रिया–कलापों को विचित्र रूप में प्रदर्शित किया है। जबकि अन्य कलाकृति में मुख स्त्री का और शरीर बकरी (जानवर) के जैसा, कई चित्रों में स्त्री पेड़ पर पक्षी के रूप में बैठी हुई तो कभी कलाकार ने स्वयं को भी एक पक्षी के स्वरूप बनाकर गिटार पकड़े हुए और कभी कीड़े के रूप में चित्रित किया है। रामचंद्रन के चित्रों में नारी आकृतियाँ अनेक भाव दर्शाती हैं। उनके चित्रों में नाभी से निकलता हुआ तम्बाकू का पेड़ और बाल की सर्पाकृति लटें बहुत ही अद्भूत अहसास दिलाते हैं।

ए० रामचंद्रन द्वारा बनाई गयी उपरोक्त कृत्रियों से स्पष्ट है कि कला की विभिन्न विधाओं जैसे चित्रकला, मूर्तिकला तथा भित्ति–चित्र के माध्यम से उन्होंने अपनी आन्तरिक संवेदना को स्वतन्त्र रूप से अभिव्यक्त किया। उनकी यह अतियथार्थवाद ऐसे ही कला आंदोलनों में से एक है जिसने कला को एक नया रूप दिया।

देश में भारतीय समकालीन कला के कुछ केन्द्र प्राथमिक स्तर पर यूरोपीय शासनकाल से प्रारम्भ होने लगे थे। विभिन्न कला प्रवृत्तियों, राजनीतिक व सामाजिक परिस्थितियों, सांस्कृतिक आदान–प्रदान, कला शिक्षा व प्रशिक्षण तथा वैश्विक परिवर्तन के दौर से समकालीन भारतीय कला प्रभावित हुई। समकालीन भारतीय कला के विकास में ए० रामचंद्रन का राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके जीवनवृत, कला शैली, व तकनिकी नूतन प्रयोग जिनमें 'ययाति', 'हालिया काम' आदि का उल्लेखनीय महत्व है।

भारतीय समकालीन के इतिहास में ए० रामचंद्रन का महत्वपूर्ण स्थान है। ए० रामचंद्रन ने चित्रकला, मूर्तिकला तथा भित्ति–चित्रों के निर्माण के द्वारा मानव में चेतना का विकास कर कला को समझने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इनकी कलाकृत्रियाँ भारत ही नही बल्कि अन्य देशों जैसे जापान, इंग्लैण्ड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका में भी देखने को मिलती हैं। भित्ति–चित्रों के धार्मिक–पक्षों में नारी एवम् सौन्दर्य के समन्वय को दर्शाया। ए०रामचंद्रन ने अपनी कला के माध्यम के द्वारा भारतीय नारी का सौन्दर्यबोध कराकर समकालीन कुलीन वर्ग को नारीकी दशा से अवगत कराकर नारी के महत्व को प्रकट किया। ए० रामचंद्रन ने केवल कला को विश्व स्वयं भागी बनकर विश्व जगत को भारतीय कला के दर्शन कराये मंगलमयी कार्यों में नारी के स्थान और महत्व के सर्वोपरी उदाहरण ए० रामचंद्रन की भित्ति–चित्रण में पाया जाता है। भित्ति–चित्र की परम्परा को समाज में मांगल्य का प्रतीक माना जाता है। फलस्वरूप भित्ति–चित्रों का सांस्कृतिक क्षेत्र में ए० रामचंद्रन का सहयोग अभूतपूर्व है जिसको कभी भी मिटाया नहीं जा सकता है। आदिवासी समूहों में रहकर उनको नजदीक से जानने के बाद और समूहों में मिलकर रहने की प्रेरणादायी चित्र ए० रामचंद्रन की सोच एवं मानवीय संवेदना के परिचारक है जो कि उनकी कला की वैज्ञानिकता को भी प्रकट करते हैं। ए० रामचंद्रन द्वारा बाल–लेखन और चित्रकारी में विचारों का प्रतीकों के रूप में चित्रण करना शिक्षण कौशल के साथ कला कौशल के विशेष उदाहरण है।अतः स्पष्ट है कि ए० रामचंद्रन ने कला जगत् में अपनी कलाकृत्रियों के माध्यम से एक नयी परम्परा की शुरुआत की जिससे कला जगत को एक नयी सोच व दिशा का मार्ग प्रशस्त हुआ।

निष्कर्ष

वर्तमान शोध अध्ययन के आधार पर यह कहा जा सकता है ए० रामचंद्रन की समकालीन चित्रकला अत्यन्त ही जटिल है। इसमें उनकी विषय–वस्तु में नारी, धार्मिक, सामाजिक, भिल, महाकाव्य, उत्सव का चित्रांकन भी अनेक विषयों पर आधारित बनाये हैं। जिसमें 'ययाति' का चित्रण सबसे लोकप्रिय है। ए० रामचंद्रन के चित्रों में बाल–साहित्य चित्र, भित्ति–चित्र, मूर्ति एवम् चित्रकला, आकृतिमूलक चित्र, धार्मिक पक्षों में नारी एवम् सौन्दर्य का समन्वय, आदिवासी चित्र, तथा समुदाय चित्रों का समन्वय मिलता है। ए० रामचंद्रन बहूमुखी प्रतिमा के धनी थे। ए० रामचंद्रन ने अपने चित्रकला के माध्यम से समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति चेतना का विकास किया। ए० रामचंद्रन एक विचारवान चित्रकार हैं। जिन्होंने भित्ति–चित्रों के माध्यम से शिक्षा जगत् में चित्र लेखन का कार्य किया जो कि उनकी मानसिक परिपक्वता को दिखाता है। ए० रामचंद्रन 'ययाति' जैसे महाकाव्य की रचना कर कला का एक नया नमूना प्रदर्शित करते हैं। ए० रामचंद्रन भित्ति–चित्रों में नारी के चित्रों के आधार पर वर्तमान समय में मंगल कार्यो में नारी के स्थान स्थापित करते हैं, जो कि भारतीय संस्कृति की महानता को इंगित करता है।अतः स्पष्ट है ए० रामचंद्रन रूप–चित्रकार के रूप में एक वैज्ञानिक, नूतन–योग करने वाले इंजीनियर, समाज–सुधारक एवं लेखक भी हैं।

यह शोध अध्ययन शोधार्थियों के साथ–साथ चित्रकारों, मूर्तिकारों, कला–दार्शनिकों व चित्रकला सम्बन्धी अध्ययन में उपयोगी होगा व सभी ए० रामचंद्रन चित्रशैली से परिचित होकर भविष्य में चित्रकला की एक नयी विद्या को लेकर वर्तमान समाज के सभी पक्षों काचित्रण कर जागरुकता का विकास कर सकेंगे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *अग्रवाल,जी0 के0. आधुनिक भारतीय चित्रकला.आगराः संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, 2009.*
2. *अशोक.कला सौन्दर्य और समीक्षा शास्त्र.आगराः संजय पब्लिकेशन्स शैक्षिक पुस्तक प्रकाशन, 2013.*
3. *गैरोला, वाचस्पति. भारतीय चित्रकला का सक्षिप्त इतिहास. इलाहाबादः लोक भारतीय प्रकाशन, 2009.*
4. *चतुर्वेदी, ममता. समकालीन भारतीय कला. जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 2008.*
5. *प्राण नाथ मागों. भारत की समकालीन कला. नई दिल्लीः नेशनल बुक ट्रस्ट इण्डिया नेहरू भवन, 2012.*

6. भारद्वाज, विनोद. बृहद आधुनिक कला कोश.नई दिल्लीः वाणी प्रकाशन दरियागंज, 2009.
7. वाजपेयी, राजेन्द्र.सौन्दर्य. भोपालः मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,2012.
8. वर्मा, अर्चना. (2014). वैश्वीकरण का चित्रकला पर प्रभाव. इन्टरनेशनल जर्नल्स ऑफ रिसर्च ग्रन्थालय, पेज सं॰ 1–2.http://granthaalayah. com/ Composition_of_colours/Articles/113_IJRG14_C C11_152.pdf. Assessed 30 May 2018.
9. https://www.google.co.in/search?q=a+ramachandran+in+hindi.
10. https://www.artoframachandran.com/biodata.html retrived on 29/5/2018.
11. http://indianexpress.com/article/lifestyle/artist-ramachandran-sees-nature-as-intrinsic-to-human-existence/.
12. https://www.artisera.com/blogs/expressions/50-years-and-counting-a-look-at-a ramachandrans - incredible-artistic-journey (Lisa Jain, 2016). Assesed 30 May 2018
13. https://www.google.co.in/search?q='Yayati'+in+serigraphs&oq='Yayati'+in+serigraphs. Assessed 30 May 2018.
14. http://www.vadehraart.com/a-ramachandran-yayati-portfolio. Assesed 31 May 2018
15. https://www.indiatoday.in/magazine/society-the-arts/story/19941031-a.-ramachandrans-painting-blends-indian-myths-and-tribal-culture-to-defy-existing-definitions-809870-1994-10-31 Assesed 31 May 2018

ए० रामचंद्रन के कुछ चित्र {सीरीज़–'ययाति' नामक भित्ति चित्र (70×60फीट) चित्र संख्या–1 से चित्र संख्या–6 तक}		
चित्र संख्या–1	चित्र संख्या–2	चित्र संख्या–3
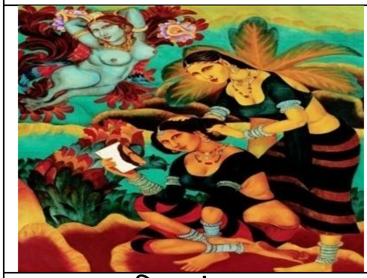		
चित्र संख्या–4	चित्र संख्या–5	चित्र संख्या–6
चित्र संख्या–7 Stamps on Mahatma Gandhi (Dandi march)	चित्र संख्या–8 women	चित्र संख्या–9 Yellow butter flies and blue lotus